लखनऊ से प्रकाशित राष्ट्रीय हिन्दी साप्ताहिक
website: www.pawanprawah.com
happy new year 2018
पवन प्रवाह
सत्य का प्रवाह सतत् प्रवाह
डाक पंजीयन संख्या GPO LW/NP-106/2015-17

प्रकृति व पर्यावरण के परस्पर संबंध व संरक्षण के उपाय

लेखक डॉ. भरत राज सिंह
स्कूल ऑफ मैनेजमेंट साइंसेज के महानिदेशक एवं वैदिक विज्ञान केन्द्र के अध्यक्ष हैं

हमारी संस्कृति में सदियों से विभिन्न अवसरों पर वृक्षों को पूजने की परंपराएं प्रतिस्थापित हैं। प्राकृतिक संपदाओं के महत्व को समझना, उनका किफायती उपयोग करना, उनके संरक्षण को प्राथमिकता देना हमारी संस्कृति का अभिन्न अंग है। पशुओं, प्राणीमात्र के जीवन के प्रति संवेदनशीलता व अपनत्व बनाए रखने की मानसिकता को विकसित कर स्थायित्व देने के उद्देश्य से ही हमारे बुजुर्गों ने इन परंपराओं को बनाया, जिनका ठोस वैज्ञानिक आधार भी है व आज भी वे उतनी ही महत्वपूर्ण तथा एक सकारात्मक सोच का वहन करती हैं।

जीवन का आधार वृक्ष: जीवन का आधार वृक्ष हैं, धरती का श्रृंगार वृक्ष हैं। प्राणवायु दे रहे सभी को, ऐसे परम उदार वृक्ष हैं। ईश्वर के अनुदान वृक्ष हैं, वृक्षों की महत्ता है कि जो पुण्य अनेकानेक यज्ञ करवाने अथवा तालाब खुदवाने या फिर देवाराधना से भी अप्राप्य है, वह पुण्य महज एक पौधे को लगाने से सहज ही प्राप्त हो जाता है। इससे कई प्राणियों को जीवनदान मिलता है।

(भाग-01)

वास्तु और वृक्ष: वास्तुशास्त्र में भी वृक्षों का मनुष्य से संबंध निरूपित किया गया है।

●पौधारोपण हेतु उत्तरा, स्वाति, हस्त, रोहिणी और मूल नक्षत्र अत्यंत शुभ होते हैं। इनमें रोपे गए पौधों का रोपण निष्फल नहीं होता है।

●घर के नैऋत्य अथवा अग्निकोण में बगीचा न लगाएँ तथा जिन घरों में बगीचा लगाने की जगह निकाली जा रही हो, वहाँ घर के वाम पार्श्व में ही उद्यान लगाना चाहिए।

●घर के पूर्व में विशाल वृक्षों का न होना या कम होना शुभ है। फिर भी यदि हो तो उन्हें काटने के बजाय घरके उत्तर की ओर उनके दुष्प्रभावों को संतुलित करने हेतु आँवला, अमलतास, हरश्रृंगार, तुलसी, वन तुलसी के पौधों में से किसी भी एक को लगाया जा सकता है।

●जिन वृक्षों में फल लगना बंद हो गए हों या कम लगते हों उन्हें कुलथी, उड़द, मूँग, तिल और जौ मिले जल से सींचना चाहिए।

●जिस वृक्ष के तने के चारों ओर सुअर की हड्डी का एक-एक टुकड़ा गाड़ दिया जाता है, वह सदैव हरा रहता है, कभी सूखता नहीं है।

●जिस घर की सीमा में निर्गुंडी का पौधा होता है, वहाँ हमेशा अमन-चैन रहता है। इसी प्रकार अंगूर, पनस, पाकड़ तथा महुआ के पौधों का भी घर की सीमा में रोपण शुभ होता है।

●आमलक को लगाने वाले की जमीन संबंधी परेशानियाँ दूर होती हैं। फिर चाहे उस व्यक्ति के द्वारा इस पौधे का रोपण कहीं भी क्यों न किया जाए।

●चन्द्रमा की पीड़ा हरण हेतु गूलर का पौधा लगाना चाहिए।

●घर के पूर्व में बरगद का, पश्चिम में पीपल का, उत्तर में पाकड़ का तथा दक्षिण में गूलर का वृक्ष होना शुभ होता है। इसके विपरीत पूर्व में पीपल, दक्षिण में पाकड़, पश्चिम में बरगद और घर के उत्तर में गूलर का वृक्ष अशुभ माना गया है।

●जिस व्यक्ति के घर में बिल्व का एक वृक्ष लगा होता है, उसके यहाँ साक्षात लक्ष्मी का वास रहता है।

●घर की सीमा में कदली (केला), बदरी (बेर) एवं बाँझ अनार के वृक्ष होने से वहाँ के बच्चों को कष्ट उठाना पड़ता है।

●घर में रेगिस्तानी पौधों का होना शत्रु बाधा, अशांति एवं धनहानि का कारक होता है। कैक्टस के पौधे इसी श्रेणी में आते हैं।

●जिस घर की सीमा में पलाश, कंचन, अर्जुन, करंज और श्लेषमांतक नामक वृक्षों में से कोई भी वृक्ष होता है, वहाँ सदैव अशांति बनी रहती है। बेर का वृक्ष अधिक शत्रु पैदा करता है। बेर का वृक्ष घर की सीमा के बाहर ही शुभ होता है।

●जो व्यक्ति दो बड़ के वृक्षों का रोपण करता है उसके अनेक पापों का शमन होता है। यह वृक्ष किसी खुले मैदान में ही रोपण करें।

●जो व्यक्ति पलाश के वृक्ष का रोपण करते हैं उन्हें उत्तम संतान और सुख देने वाले पुत्र अवश्य ही प्राप्त होते हैं, किंतु पलाश का वृक्ष घर की सीमा में न हो।

●किसी भी कारण से वृक्ष के काटने पर दूसरे 10 वृक्षों का रोपण और पालन करने वाला उसके पाप से मुक्त हो सकता है।

वट (बरगद) वृक्ष की कहानी का रहस्य: ज्येष्ठ माह की पूर्णिमा के दिन वट (बरगद) की पूजा सुहागिनों द्वारा की जाती है। कहानी बताती है कि सावित्री का विवाह सत्यवान से तय हुआ जो अल्पायु था। सावित्री मन ही मन उसे अपना पति मान चुकी थी। अतः अल्पायु होने की बात जानने के उपरांत भी उसने सत्यवान से ही विवाह करने का अपना निश्चत दृढ़ रखा। विवाह पश्चात एक दिन दोनों बरगद की घनी छांव में विश्राम कर रहे थे, यम (मृत्यु के देवता) सत्यवान के प्राण हरने आए तब सावित्री ने उन्हें बड़ी चतुराई से 3 वचनों के जाल में फांस कर सत्यवान के शतायु होने का वरदान साथ ही सास-ससुर की आंखें व साम्राज्य तथा अपने माता-पिता की खुशहाली का वर मांग लिया। तब से वट को धागा बांध पति की लंबी आयु, उसके अच्छे स्वास्थ्य व प्रगति उन्नति की कामना में इस व्रत का प्रारंभ हुआ। आज के युग में यह हास्यास्पद लग सकता है, पर पति-पत्नी के रिश्ते में समर्पण सामंजस्य व सहजता, सौहार्द, सहभाव सब कुछ हर युग में अपेक्षित है। आपस में स्नेह व समझदारी हो तो संकट की हर घड़ी पार की जा सकती है। एक दूसरे के प्रति विश्वास व त्याग की भावना प्रबल हो तो जीवन पथ पर आने वाली हर मुश्किल का हल निकल ही आता है। आपस के सामंजस्य से, तालमेल से जीवन सुखद व आनंदमय हो जाता है। पति-पत्नी के रिश्ते सुखद व सुसंस्कृत हो, तो नई पीढ़ी को अच्छे संस्कार मिलते हैं जिससे परिवार में, समाज में, राष्ट्र में एक स्थिरता का प्रसन्नता का, सुख का, सुकून का माहौल बनता है जो वास्तव में उन्नति व प्रगति के शिखर का सच्चा पर्याय बनता है। इस तरह सावित्री प्रतीक है नारी के पति व ससुराल के प्रति प्रेम, स्नेह, समर्पण के भाव को दृढ़ इच्छा शक्ति के साथ निभाने की सहज स्वाभाविक प्रवृत्ति की, जिसके दम पर वह यम/मृत्यु (असंभव को संभव) तक से लड़ कर जीत गई। वरना आज असहनशीलता व अहं की टकराहट से रिश्ते बिखर रहे हैं, परिवार टूट रहे हैं व बच्चे जीवन भर सिंगल पेरेंट्स के कारण मानसिक त्रासदी से गुजर रहे हैं। विवाह के पश्चात् भी मायके की जिम्मेदारी निभाने का जो जज्बा सावित्री के तीसरे वर में दिखाई देता है। यह आधुनिक सोच से भी मेल खाता है व बेटियों को अपनी दोहरी जिम्मेदारी भी दृढ़ता से निभाने का संदेश देता है।

यह त्यौहार प्रकृति से सानिध्य बनाए रखने का, उन्हें देव समझ पूजने का, इसी बहाने उनसे आत्मीयता कायम करने की प्रेरणा व सीख देता है। ये वृक्ष हमारी धरोहर हैं, इनकी महत्ता समझ इनके प्रति संवेदना रखने पर अपनत्व रखने पर ही हम इनका संरक्षण कर सकेंगे। अतः ये परम्पराएं जो हमें वृक्षों से पर्यावरण से जोड़ती हैं अत्यंत महत्वपूर्ण है।

बरगद, वट, बनयान, फाइकस बेन्गालेनसिस

1). बरगद-हमारी संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है।
2). हिन्दी में बरगद, संस्कृत में वटवृक्ष, मराठी में वट, अंग्रेजी में बनयान व वनस्पतिशास्त्र में इसे फाइकस बेन्गालेनसिस कहा जाता है।
3). कलकत्ता में इसका 250 वर्ष पुराना सबसे बड़ा वृक्ष है। इसलिए इस प्रजाति का नाम फाइकस बेन्गालेनसिस पड़ा।
4). इसका पुराना तना सड़ने के बाद भी यह अपनी वायवीय जड़ों के कारण हरा भरा रहता है। इसलिए यह दीर्घजीवी व अमरता का प्रतीक है।
5). प्राचीन समय में भारतीय व्यापारी (बनिया) अपना व्यापार इसी की घनी छाया में करते थे इसलिए इसका नाम बनयान पड़ा।
6).इसकी जड़े स्तंभ (तने) से निकल धरती की ओर विकसित होती हैं व पुनः बाहर निकलती हैं।
7). यह वृक्ष अधिक तापमान व अधिक उमस वाले क्षेत्रों में पनपता है।
8). इसके बीजों को 12 घंटे गरम पानी में भिगोकर रखने के बाद बोने से ही अंकुरण से नया पौधा तैयार होता है।
9). इसमें 2-प्रकार की जड़ें पाई जाती हैं -

●**सामान्य जड़ें -** धरती के अंदर नीचे की ओर विकसित होती है।

●**अस्थानिक जड़ें -** पेड़ की वायवीय शाखाओं से निकल भूमि में प्रवेश कर स्तंभ (खंबे) की तरह पेड़ को आधार देती हैं और स्तंभ मूल कहलाती है।
10). पत्तियां बड़ी, चमड़े जैसी मजबूत व चमकदार होती हैं जिन्हें कृष्ण की जन्मस्थली माना जाता है।
11). इससे निकलने वाला दूध जैसा स्राव दर्द निवारक (दांत के दर्द) होता है।
12). इससे प्राप्त ल्यूकोसाइनाड्स- डायबिटीज (मधुमेह) की दवा में प्रयुक्त होता है।
13). इसकी लकड़ी पानी से जल्दी खराब नहीं होती अतः फर्निचर में काम आती है।
14). तने व जड़ों से प्राप्त रेशा, पेपर व रस्सी बनाने के काम आता है।
15). ताजे फल सुखाकर खाए जाते हैं।
16). पुष्पक्रम विशिष्ट प्रकार- हाइपेन्थोडियम कहलाता है।
17). यह इण्डोनेशिया में एकता का प्रतीक माना जाता है।
18). इसका आकर्षक बोन्साई सुंदरता के कारण बहुमूल्य व महंगा होता है।

भारत के देहातों में इसके आसपास ट्रैफिक सर्कल, बस स्टैंड होते हैं व रात में चौपाल लगती है। अतः यह सामाजिक संस्कृति का परिचायक है। प्रकृति की इस अप्रतीम अद्भुत देन सुहाग की लंबी उम्र की कामना व परिवार के हित के लिए इसके संरक्षण को परंपराओं की आड़ में ही सही, विकसित करने का आधार वैज्ञानिक व आधुनिक है।

ऐसी स्वस्थ परंपराओं को नए स्वरूप में अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर सहेजने की जरूरत है। आज के युग में प्रदूषण के प्रकोप से, प्राकृतिक विपदाओं से निपटने की पूर्व तैयारी के रूप में इन्हें पुनर्स्थापित करना सामयिक सार्थक है।

पर्यावरण व प्रकृति सरक्षण के उपाय

1. प्रकृति के सानिध्य का सुख समझें। अपने आसपास छोटे पौधे हो या बड़े वृक्ष लगाएं। धरती की हरियाली बढ़ाने के लिए कृतसंकल्प हो तथा लगे हुए पेड़-पौधों का अस्तित्व बनाए रखने का प्रण ले सहयोग करें।
2. अपने या बच्चों के जन्मदिन हो या कोई भी यादगार क्षण पेड़ लगाकर उन यादों को चिरस्थायी बनाएं।
3. हल्दी कुंकु का घरेलू आयोजन हो या बड़े समारोहों में अतिथि स्वागत, पुष्प गुच्छ के स्थान पर हार पहनाने की बजाए पौधे देकर सम्मानित करें, स्नेह संबंधों को चिरस्थायी बनाएं।
4. सड़कें या घर बनाते समय यथासंभव वृक्षों को बचाएं अत्यावश्यक हो तो पांच गुना पेड़ लगाकर प्रकृति को सहेजे।
5. अपने घर आंगन में थोड़ी सी जगह पेड़ पौधों के लिए रखें। ये हरियाली देंगे, तापमान कम करेंगे, पानी का प्रबंधन करेंगे व सुकून से जीवन में सुख व प्रसन्नता का एहसास कराएंगे।
6. पानी का संरक्षण करें, हर बूंद को बचाएं-

●ब्रश करते समय नल खुला न छोड़ें।
●शॉवर की जगह बाल्टी में पानी लेकर नहाएं।
●गाड़ियां धोने की बजाए बाल्टी में पानी लेकर कपड़े से साफ करें।
●आंगन व फर्श धोने की बजाए झाड़ू व बाद में पोंछा लगाकर सफाई करें।
●प्रतिदिन फर्श साफ करने के बाद पौंछे का पानी गमलों व पौधों में डालें। (फिनाइल रहित पानी लें)।
●दाल, सब्जी, चावल धोने के बाद इकट्ठा कर पानी गमलों व क्यारियों में डालें।
●सार्वजनिक नलों को बहते देखें तो नल बंद करने की जहमियत उठाएं।
●मेहमानों को पानी छोटे गिलास में दें व फिर भी पानी बचे तो गमलों में डालें।
●बर्तन धोते समय पानी का किफायत से उपयोग करें।
●कपड़ों में कम से कम साबुन डालें ताकि कम पानी में कपड़े धुल सकें।
●कूलर इत्यादि का उपयोग घर के सभी सदस्य साथ बैठकर करें।
●नल को टपकने न दें, प्लम्बर बुलाकर तुरंत ठीक करवाएं।
●टंकी बहने न दें।

7.ऑफिस हो या घर बिजली का किफायती उपयोग करें।

●कमरे से बाहर निकलते लाइट, पंखें बंद करें।
●एक ही कमरे में एसी, टी.व्ही. इत्यादि चलाएं।
●एसी, फ्रिज में जहरीली गैसे प्रयुक्त न हों इसका ध्यान रखें व ऐसे ही उपकरण करीदने का आग्रह करें जो पर्यावरण को नुकसान न पहुंचाए।
●सड़कों पर देर तक जलने वाली लाइट्स बंद करें या करवाएं।
●विद्युत उपकरणों का समय-समय से रखरखाव करें।

8. पेट्रोल-यह प्राकृतिक संपदा महंगी भी है व इसका पुनउर्त्पादन बहुत लम्बा है, अतः

●किफायती उपयोग करें।
●संभव हो तो पब्लिक ट्रांसपोर्ट का उपयोग करें।
●एक ही दिशा में रहने वाले कर्मचारी एक साथ दफ्तर आए-जाए।
●देर तक रूकना पड़े तो इंजन बंद करें।
●गाड़ी की सर्विसिंग यथासमय कर वातावरण को प्रदूषित होने से बचाएं।

9. पशु पक्षियों को जीने दें। इस पृथ्वी पर मात्र आपका ही नहीं मूक पशु-पक्षियों का भी अधिकार है, अतः

●उनके आवास स्थलों पेड़-पौधों को नष्ट न करें।
●उनके दाना-पानी का इंतजाम कर थोड़ी सहृदयता दिखाएं।
●बाल्टी में गाय, बकरी, कुत्ते आदि के लिए व चकोरों में पक्षियों के लिए पानी का इंतजाम करें।
●गाय, कुत्ते को रोटी दें पर पॉलीथीन समेत खाना न फेंके, उनकी जान जा सकती है।
●प्राणीमात्र पर दया का भाव दिखाएं।

10. घर का कचरा सब्जी, फल, अनाज को पशुओं को खिलाएं।
11. अन्न का दुरुपयोग न करें। बचा खाना खराब होने से पहले गरीबों में बांटे।
12. पॉलीथीन का उपयोग ना करें। सब्जी व सामान के लिए कपड़े की थैलियां गाड़ी में, साथ में सदा रखें।
13. यहां वहां थूककर, चाहे जहां मूत्र विसर्जन के लिए खड़े होकर अपनी (अ) सभ्यता व (ब) शिक्षित होने का प्रश्नचिन्ह न लगने दें।

सबसे महत्वपूर्ण स्वयं तथा नई पीढ़ी को प्रकृति, पर्यावरण, पानी व पेड़-पौधों का महत्व समझाएं व संवेदनशील हो उनसे सानिध्य स्थापित करने की सोच विकसित करें। पृथ्वी हरी भरी होगी तो पर्यावरण स्वस्थ होगा, पानी की प्रचुरता से जीवन सही अर्थों में समृद्ध व सुखद होगा। ●